आध्यात्मिक विभूति

हनुमान प्रसाद पोद्दार

गोपाल शरण गर्ग

आध्यात्मिक विभूति

हनुमान प्रसाद पोद्दार

गोपाल शरण गर्ग
(राष्ट्रीय महामंत्री)

श्री अग्रसेन फाउंडेशन

प्रकाशक :
श्री अग्रसेन फाउंडेशन
83, मॉडल बस्ती, करोल बाग, नई दिल्ली-110005
दूरभाष : 011-23633333, 23510630
E-mail : agroha@gmail.com
Website : www.allagrawal.org

आध्यात्मिक विभूति

हनुमान प्रसाद पोद्दार

ISBN : 978-81-929878-7-3

मूल्य : ₹ 40/-
© : प्रकाशक
प्रथम संस्करण : 2015
शब्द-संयोजन एवं आवरण : आधुनिक जनसंचार प्रा.लि. / 97180 67709
मुद्रक : आधुनिक जनसंचार प्रा.लि. / 011-27103051

Adhyatmik Vibooti
Hanuman Prasad Poddar *by* Gopal Saran Garg

आध्यात्मिक विभूति

हनुमान प्रसाद पोद्दार

उन्हें गोरखपुर के अंग्रेज कलक्टर ने 'राय साहब' की उपाधि देना चाही, उन्होंने विनम्रतापूर्वक इनकार कर दिया। अंग्रेज कमिश्नर होबर्ट ने उन्हें 'राय बहादुर' का खिताब देना चाहा, उन्होंने फिर मना कर दिया।

डॉ. सम्पूर्णानंद, कन्हैयालाल मुंशी और तत्कालीन गृहमंत्री गोविन्द बल्लभ पंत ने उन्हें 'भारत रत्न' से अलंकृत करने की योजना बनायी तो उन्होंने फिर हाथ जोड़ लिए। उनका कहना था कि वह, उपाधि की व्याधि से मुक्त रहने का संकल्प ले चुके हैं। इसलिए मेहरबानी करके कोई उनके संकल्प में बाधा न डालें। ऐसे थे हनुमान प्रसाद पोद्दार। वह स्वाधीनता सेनानी थे। समाजसेवी थे, साहित्यकार और पत्रकार थे तथा उच्चकोटि के आध्यात्मिक व्यक्ति थे लोग सम्मान और प्रेम से उन्हें भाई जी कहते थे।

पोद्दार जी का जन्म 17 सितंबर, 1892 (आश्विन शुक्ल 12, वि.सं. 1942) को रतनगढ़ नगर (राजस्थान) में हुआ था। उनके पिता भीमराज अग्रवाल और माता दिखीबाई हनुमानजी के भक्त थे। इसलिए उन्होंने अपने पुत्र का नाम हनुमान प्रसाद रखा। यानि एक भक्तिभाव जन्म से ही उनके साथ जुड़ गया। उन्होंने बचपन में घर में रामायण, गीता और श्रीमद्भागवत सुनी तो जैसे आध्यात्म उनके तनमन में समा गया।

हनुमान प्रसाद जब दो साल के थे, उनकी माताजी चल बसीं। उनके पालन-पोषण की जिम्मेदारी दादी रामकौर बाई पर आ पड़ी। दादी भी बहुत धार्मिक प्रवृत्ति की थीं। उन्होंने पोते को 'हनुमान कवच' का पाठ याद करवा

दिया। सिद्ध संत बखन्नाथ जी के कहने पर दादी ने उन्हें गीता के श्लोक याद कराना शुरू किये। कमाल की बात है कि बालक हनुमान प्रसाद ने एक वर्ष में ही पूरी गीता कंठस्थ करली। संत बखन्नाथ ने ही भविष्यवाणी की थी कि यह बालक बड़ा होकर गीता और रामायण का सबसे बड़ा प्रचारक बनेगा। और ऐसा ही हुआ। गीता प्रेस की मार्फत पोद्दार जी ने दुनिया भर में गीता और रामायण पहुंचायी। उनकी शिक्षा-दीक्षा निम्बार्क सम्प्रदाय के संत ब्रजदासजी ने की।

धार्मिक संस्कारों के साथ शुरू हुआ पोद्दार जी का बचपन युवा होते-होते क्रांतिकारी बन बैठा। वह अंग्रेजों के खिलाफ स्वाधीनता आंदोलन में कूद पड़े। रासबिहारी बोस और विपिनचंद्र पाल के कार्यों से वह बहुत प्रभावित हुए। बालगंगाधर तिलक और महर्षि अरविन्द के लेखों व वीर सावरकर की पुस्तक '1857 का स्वातंत्र्य समर' ने उन पर बहुत असर डाला। तब वह कोलकाता में रह रहे थे। वह युवा बंगाली क्रांतिकारियों की गुप्त बैठकों में शामिल होने लगे। मुम्बई में वह महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस, वीर सावरकर, महादेव देसाई जैसी महान विभूतियों के संपर्क में आये। तभी पोद्दारजी ने कोलकाता की साहित्य सवर्द्धनी समिति की ओर से गीता का प्रकाशन करवाया। इसके कवर पर भारत माता का ऐसा चित्र था, जिसमें वह

इतने निडर

आध्यात्मिक होने की वजह से ही पोद्दारजी बेहद निडर थे। 1936 में गोरखपुर में बाढ़ से भीषण तबाही हुई। जवाहरलाल नेहरू बाढ़ पीड़ित क्षेत्रों का दौरा करने के लिए गोरखपुर आये। क्षेत्र के दौरे के लिए उन्हें कार की जरूरत थी। अंग्रेज कलक्टर ने शहर में कार रखने वालों को धमका रखा था कि अगर किसी ने नेहरूजी को कार उपलब्ध करायी तो उसका नाम 'विद्रोहियों' में डाल दिया जाएगा। सब विवश हो गये। बाबा राघवदास ने पोद्दार जी को इस स्थिति से अवगत कराया। पोद्दारजी को शहर के रईसों पर दया आयी और अंग्रेज कलक्टर पर गुस्सा। उन्होंने तुरंत अपनी कार नेहरूजी के लिए भेज दी।

आक्रामक मुद्रा में हाथ में तलवार लिए खड़ी थीं। जिला प्रशासन को यह कवर बगावती लगा। इसलिए उस पर प्रतिबंध लग गया और गीता की सभी प्रतियां जब्त कर ली गयीं।

पोद्दारजी ने 1906 में विदेशी कपड़ों का जबरदस्त विरोध किया। उन्होंने यह आंदोलन अपने घर से शुरू किया। दादी रामकौर बाई और पत्नी रामदेई ने अपने तमाम विदेशी कपड़े आग के हवाले किये। पोद्दारजी ने नागरमल मोदी के सहयोग से स्वदेशी वस्तु भंडार की स्थापना की। मुम्बई में अग्रवाल युवकों को साथ लेकर 'मारवाड़ी खादी प्रचार मंडल' बनाया। उन्होंने जमनालाल बजाज के साथ जाकर महाराजा बीकानेर को खादी पहनने और खादी का प्रचार करने की प्रेरणा दी।

पोद्दारजी धीरे-धीरे अन्य क्रांतिकारियों के सम्पर्क में आते गये। 1938 में सावरकरजी से मिलने के लिए मुम्बई भी गये थे। कुछ युवा क्रांतिकारी जब पकड़े गये तो पोद्दारजी ने उनकी पैरवी भी की। इससे खुलकर पुलिस की नजरों में आ गये और 1914 में खतरनाक राजद्रोही घोषित कर दिये गये।

हुआ यों कि कलकत्ता की रोडा एंड कम्पनी की हथियारों से लदी एक बैलगाडी बंदरगाह से चलते ही क्रांतिकारियों ने लूट ली। इसमें पेटियों में बंद 50 पिस्तौलें और 50 हजार कारतूस थे। क्रांतिकारियों ने पिस्तौलें तो साथियों में बांट लीं, कारतूस छिपाने में दिक्कत आयी। फिर भी थोड़े-थोड़े कारतूस कुछ लोगों के यहां छिपाये गये। पोद्दारजी को भी कुछ कारतूस छिपाने को दिये गये। उन्होंने अपनी बिरला श्रॉफ एंड कम्पनी की गद्दी में कारतूस छिपा लिए। लेकिन सीआईडी और पुलिस की सख्ती से एक बंगाली युवक टूट गया। पोद्दारजी के साथ ज्वाला प्रसाद कनोडिया, ओंकारमल सर्राफ व फूलचंद चौधरी को राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर कलकत्ता डुरान्डा हाउस जेल में बंद कर दिया गया। बाद में अलीपुर जेल में स्थानान्तरित कर दिया गया। ताकि फिर कोई षड्यंत्र न कर सकें, इसलिए चारों को अलग-अलग कोठरियों में रखा गया। ऊपर से जुल्म यह कि अंग्रेजों ने कुछ अंग्रेज-भक्त मारवाड़ियों से इन चारों को समाज का कलंक घोषित करवा दिया। जबकि तमाम खतरों के बावजूद झाकरमल शर्मा जैसे पत्रकार इन सबको

खुल्लमखुल्ला खाना भिजवाते रहे।

पोद्दारजी जेल की एकांत कोठरी में भगवन्नाम जप करते रहते थे। एक माह बाद अलीपुर जेल से उन्हें अगस्त 1916 में 'भारत रक्षा विधान' के तहत शिमलापाल (जिला बांकुड़ा) में नजदबंद कर दिया गया।

खादी का प्रचार

इस समय देश में ऐसा कोई वस्त्र नहीं है, जो ज्यादा पवित्र हो या जिसमें हिंसा न होती हो। विलायती और मिल के कपड़ों में चर्बी लगती है, जिसमें अपवित्रता और हिंसा दोनों ही सम्मिलित हैं। रेशमी वस्त्रों को प्राचीनकाल में शुद्ध मानते थे। पर अब तो रेशम के धागे बनाने में असंख्य जीव उबलते हुए जल में डाले जाते हैं। इससे रेशम भी अपिवत्र और हिंसामय है। ऊनी कपड़े इस देश में हमेशा लोग नहीं पहन सकते, परंतु खादी उपर्युक्त दोनों की अपेक्षा पवित्र और हिंसा रहित है। पवित्रता का असर मन पर होता है, जिससे भगवान में मन लगता है। खादी पहनते ही सादगी आ जाती है। शौकीनी छूटते ही अनेक दोष आप ही चले जाते हैं। कपड़े का खर्च कम हो जाता है। इसके सिवा खादी में सबसे बड़ी बात है गरीबों, भूखों की सेवा और देश की संस्कृति का सम्मान। आज करोड़ों स्त्री-पुरुष कार्य के अभाव से अन्न-वस्त्र नहीं पाते। देश खादी पहनने लगे तो कातने, बुनने आदि कामों में लगकर करोड़ों भाई-बहन सुखी हो सकते हैं। इस प्रकार खादी में पवित्रता, अहिंसा, सादगी, स्वावलम्बन, सदाचार, वैराग्य, दान और भगवान की पूजा रूप परमार्थ भरा है। अतएव सभी भाई-बहनों को खादी जरूर पहननी चाहिए।

—हनुमान प्रसाद पोद्दार

❖❖❖

पोद्दारजी और समाज सेवा

पोद्दारजी जब शिमलापाल में नजरबंद थे तो वहां अन्य लोगों की सेवा करते थे। वहां एक सरकारी होम्योपेथ डॉक्टर आता था। उसके साथ बैठ-बैठकर पोद्दारजी ने होम्योपेथी दवाओं का ज्ञान प्राप्त किया। उन्होंने पुस्तकें भी मंगवालीं। उनका अध्ययन किया। दवाएं मंगवाकर मरीजों का इलाज शुरू कर दिया। वह 21 माह तक नजरबंद रहे और इस बीच उन्होंने **रोगियों को रोगमुक्त किया।** भारत विभाजन के बाद 1949 में नोआखाली (तत्कालीन पूर्वी बंगाल अथवा पाकिस्तान, वर्तमान में बांग्लादेश) में हुए नरसंहार पर उनका हृदय द्रवित हुआ। उन्होंने अपने सहयोगियों को जनसेवा के लिए वहां भेजा। मदनमोहन मालवीय जी का तो इन घटनाओं के मानसिक आघात से निधन ही हो गया था।

पोद्दारजी ने **गोहत्या के खिलाफ** भी बहुत काम किया। 1966 में सर्वदलीय गोरक्षा अभियान समिति द्वारा देशभर में चलाये गये आंदोलन में उनकी विशेष भूमिका रही। उनको यह देखकर बहुत दुख होता था कि जिन मूल्यों की रक्षा अथवा पुनर्स्थापना के लिए स्वाधीनता संघर्ष किया गया, अब उन्हीं की अवहेलना हो रही है। जैसे शराब को राजस्व प्राप्ति का साधन बना लिया गया। हिन्दी की जगह अंग्रेजी का ही वर्चस्व रहा, राष्ट्रीयता के नाम पर जातिवाद, भाषावाद और क्षेत्रवाद चल पड़ा है। साहित्य के नाम पर फूहड़ता दिखायी देने लगी।

पं. मदनमोहन मालवीय जब धन संग्रह के लिए कोलकाता आये तो पोद्दारजी ने उन्हें इस काम में बहुत मदद की। तब पोद्दारजी कोलकाता हिन्दू महासभा के मंत्री थे। पोद्दारजी ने कृष्णा जन्मभूमि (मथुरा) के पुनरुद्धार कार्य

में उल्लेखनीय योगदान दिया। वहां भागवत भवन का शिलान्यास किया। इसके साथ ही जयदयाल डालमिया व रामनाथ गोयनका जैसे उद्योगपति सेठ भी पुनरुद्धार कार्य में आगे आये।

पोद्दारजी ने मारवाड़ी अग्रवाल सभा के माध्यम से भी अग्रवाल समाज की बहुत सेवा की। सभा का पहला अधिवेशन 1976 में हुआ था और 1977 में पोद्दारजी इसके मुम्बई के मंत्री बनाये गये थे। पोद्दारजी ने अग्रवाल समाज को सुधारने की प्रेरणा दी। उन्होंने गोपालन, प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार , बाल विवाह का विरोध, गरीबों एवं विधवाओं की सेवा करने का समाज से आह्वान किया। पोद्दारजी ने 1936 में गोरखपुर में आयी भीषण बाढ़ और 1938 में राजस्थान में पड़े भयंकर सूखे के समय तन-मन-धन से लोगों की सेवा की। उन्होंने गाय-बैलों के लिए चारे की भी व्यवस्था की।

पोद्दारजी नारी उद्धार में लगे रहे। उन्होंने मुम्बई में वेश्यालयों से अनेक युवतियों को मुक्त कराया। ये वे युवतियां थीं जो विभिन्न स्थानों से भगाकर लायी गयी थीं और जबरन जिस्मफरोशी के धंधे में धकेली गयी थीं। गुंडों ने उन्हें लगातार धमकियां दीं पर वह भयभीत नहीं हुए।

पोद्दारजी ने सामाजिक उत्सवों को सुरुचिपूर्ण ढंग से मनाने का भी अभियान चलाया। हुआ यों कि एक विवाह समारोह में उन्होंने महिलाओं को अश्लील गीत गाते सुना। उन्हें बहुत दुख हुआ। उन्होंने विवाह समारोहों के लिए सदाचार और ईश्वर भक्ति की प्रेरणा देने वाले गीत लिखे। ये 'मारवाड़ी धार्मिक गीत' शीर्षक से प्रकाशित पुस्तिका में संकलित किये गये। फिर ये गीत ही समाज के विवाह समारोहों में गाये जाने लगे।

उन्होंने धर्म का निष्ठा से पालन करने, धर्म शास्त्रों का अध्ययन करने और व्यापार में ईमानदारी बरतने पर भी बहुत जोर दिया था।

प्रेत का उद्धार

पोद्दारजी ने इन्सानों की सेवा तो की ही प्रेत का भी उद्धार किया। बात मुम्बई की है। पोद्दारजी प्रतिदिन शाम को चौपाटी जाते और बेंच पर बैठकर भगवत चिंतन करते, जाप करते। एक दिन उनकी ध्यानावस्था टूटी तो सामने

पादरियों जैसी पोशाक पहने एक व्यक्ति को खड़े देखा। पोद्दारजी ने उनसे बैठने को कहा। पर उसने कहा, डरिएगा मत, मैं आपको कोई नुकसान नहीं पहुंचाऊंगा। आप मेरा पिंडदान करवा दें तो मैं मुक्ति पाऊं। मैं प्रेत हूं। पोद्दारजी धबराये तो, लेकिन हिम्मत करके उन्होंने उससे और बात की। वह एक पारसी व्यक्ति था। उसने उनको पूरा पता बताया। पोद्दारजी ने मालूमात की तो पता चला कि वह सज्जन पारसी जरूर थे पर हिन्दू धर्म में आस्था रखने लगे थे। प्रतिदिन गीता का पाठ करते थे।

पोद्दारजी ने अपने परिचित हरिराम पंडित को भेजकर उन सज्जन का श्राद्ध एवं पिंडदान करवाया। बात यहीं समाप्त नहीं हुई। वह पारसी प्रेत पुनः प्रकट हुआ। उसने पोद्दारजी को धन्यवाद दिया और अपने उच्चलोक में जाने की सूचना दी।

उल्लेखनीय सेवाएं

- 'भाईजी' हनुमान प्रसाद पोद्दार ने कलकत्ता में 'मारवाड़ी सहायक समिति', जिसका कालांतर में 'मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी' नाम पड़ा, की स्थापना कर सेवा का मार्ग प्रशस्त किया।
- वेदों के अध्ययन-अध्यापन के लिए 'भारतीय चतुर्धाम वेदभवनन्यास' की स्थापना।
- विश्व हिन्दू परिषद् के संस्थापक सदस्य।
- देश की सर्वमान्य शैक्षणिक संस्था 'सरस्वती शिशु मंदिर' की सर्वप्रथम स्थापना गोरखपुर में कराई।
- गो-रक्षण एवं गो-सेवा के आंदोलन का सफल नेतृत्व।
- अयोध्या की श्रीराम जन्म भूमि को मुक्त कराने का प्रथम प्रयास।
- श्रीकृष्ण जन्मभूमि का पुनरुद्धार-केशव मंदिर का शिलान्यास।
- मूक-बधिर विद्यालय की स्थापना।
- कुष्ठ निवारण केन्द्र की स्थापना।
- अकाल, बाढ़, भूकम्प, महामारी आदि प्राकृतिक आपदाओं से त्रस्त जनमानस की सहायता।

- समाज की अभावग्रस्त, निराश्रित महिलाओं, विधवाओं के जीवन-यापन के लिए नियमित अनुदान।
- विवाह योग्य गरीब कन्याओं के विवाह हेतु आर्थिक सहयोग।
- असमर्थ विद्यार्थियों को शिक्षा-अनुदान, उनकी छात्रवृत्ति तथा पुरस्कारों से सहायता।
- गरीब गृहस्थों की आर्थिक कठिनाइयों के निवारण हेतु ससम्मान सहयोग।
- हिन्दू विश्वविद्यालय (काशी) की स्थापना के समय महामना पं. मदनमोहन मालवीय तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन (प्रयाग) के लिए राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन के साथ सहायता एकत्र करने में मदद।
- ऋषिकेश में श्रद्धेय स्वामी शिवानंदजी द्वारा स्थापित दिव्य जीवन संघ का उद्घाटन।
- देश के आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए सतत् प्रयत्नशील।
- हिन्दू जनमानस को सुसंस्कारित, बलिष्ठ एवं संगठित बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान।
- बेमेल विवाह के विरुद्ध अभियान चलाया।
- अग्रवाल समाज को कुरीतियों के विरुद्ध जागृत किया।
- अंग्रेजी वस्तुओं के बहिष्कार तथा स्वदेशी के प्रचार के लिए 'स्वदेशी वस्तु भंडार' की स्थापना।

❖❖❖

पोद्दारजी, साहित्य, गीताप्रेस और 'कल्याण'

श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार उच्चकोटि के कवि और लेखक थे। पर उनकी लेखनी आध्यात्म और समाज सुधार के लिए ही चली। 'पत्रपुष्प' नाम से उनके पांच भजन संग्रह प्रकाशित हुए। उन्होंने 25 हजार से ज्यादा निबंध व प्रेरणा देने वाले लेख लिखे। उन्होंने 'विवाह में दहेज' और 'सिनेमा मनोरंजन या विनाश का साधन' जैसी पुस्तकें भी लिखीं।

श्री पोद्दार ने अपने साहित्य में नैतिक मूल्यों को महत्व दिया। लोगों को भगवद भक्ति और सद्मार्ग की ओर प्रेरित किया। अपनी पुस्तक 'पूर्ण समर्पण' में उन्होंने साहित्य की व्याख्या करते हुए लिखा है— **'साहित्य एक बड़ी महत्व की वस्तु है। उसमें मनुष्य के चित्त को खींचकर उसे चाहे जिस ओर लगा देने की शक्ति है। साहित्य का ही प्रभाव था कि एक दिन भारत की गति सर्वथा भगवद्भिमुखी थी। आज यह दूषित साहित्य का ही प्रभाव है कि भारतीय मानव भक्ति की जगह भोगों की ओर दौड़ रहा है। जो साहित्य मनुष्य की अंतर की सुप्त पवित्र सात्विक भावनाओं को जगाकर उसे भगवद्भिमुखी बना देता है, वही सत्-साहित्य है और उसी से मानव का कल्याण होता है। इसके विपरीत जिस साहित्य से भोग वासना बढ़ती है, जो अंदर की असत्-वृत्तियों को उभारकर मानव को भगवान् की ओर से हटा देता है और भोगों की अदम्य लालसा से व्याकुल कर देता है, वह असत् साहित्य है और उससे मानव-जगत् का सर्वतोमुखी पतन होता है।'**

पोद्दार जी की एक पुस्तक है— 'लोक-परलोक का सुधार'। यह वास्तव में उन पत्रों का संग्रह है जो उन्होंने लोगों के जिज्ञासापूर्ण पत्रों के जवाब में उनकी जिज्ञासाओं को शांत करते हुए लिखे थे। ईश्वर से संबंधित उनके लेखों का संग्रह 'भगवच्चर्या' पांच खंडों में प्रकाशित हुआ है। (पोद्दारजी की पुस्तकों की सूची पुस्तक के अंत में पृष्ठ 24 पर देखें।)

पोद्दारजी संगीताचार्य विष्णु दिगम्बरजी के सत्संग में जाकर कविता लिखने को प्रेरित हुए। उन्होंने कुछ भजन लिखे और विष्णु दिगम्बरजी को दिखाये। उन्होंने खुश होकर आशीर्वाद दिया कि आप भगवद्हृदय कवि ही नहीं बनेंगे आपके हृदय में निरंतर भक्ति भागीरथी प्रवाहित होती रहेगी।

पोद्दारजी के मौसेरे भाई जमदयाल गोयंदका मुम्बई में रहते थे। धार्मिक क्षेत्रों में उनका बहुत प्रभाव था। गोयंदकाजी ने अपने जीवन का लक्ष्य 'श्रीमद्भगवद्गीता' का प्रचार-प्रसार बनाया हुआ था। पोद्दारजी उनसे बहुत प्रभावित हुए। उन्हें अपना मार्गदर्शक मानने लगे।

गोयंदकाजी ने पाया कि 'श्रीमद्भागवद्गीता' के प्रकाशन में कई अशुद्धियां रह जाती हैं। फिर इसके श्लोकों का भावार्थ भी सरल भाषा में उपलब्ध नहीं है। उन्होंने इन कमियों को दूर करने की ठानी। उन्होंने स्वयं

गांधीजी की नसीहत

'कल्याण' के लिए गांधीजी का लेख चाहिए था। उनसे लेख लिखने का निवेदन करने के लिए पोद्दारजी सेठ जमनालाल बजाज के साथ उनके पास गये। तो गांधीजी ने उनके कहा— 'विज्ञापन के प्रलोभन से बचना और पुस्तकों की समीक्षा वाला स्तंभ पत्रिका में कभी नहीं देना।' गांधी जी का तर्क था कि यदि विज्ञापन से धन प्राप्ति का लोभ लग गया, तो फिर बहुत सी औषधियों और वस्तुओं के झूठे गुण बखान कर जनता को ठगने वाले विज्ञापन भी देने पड़ेंगे। इस ठगी में एक पत्रिका भागीदार क्यों बने? इसी प्रकार अपनी पुस्तकों की समीक्षा के आकांक्षी लोग केवल उसकी प्रशंसा को छपवाना चाहेंगे। यदि किसी पुस्तक की विषय सामग्री की आलोचना कर दी गई, तो वे विरोधी बन जायेंगे। इसलिए इन दोनों से बचना चाहिए।

एक टीका लिखी। टीका कलकत्ता के वणिक प्रेस में छपी। पर जब पुस्तक छपकर आयी तो भी उसमें कई अशुद्धियां रह गयीं थीं। गोयंदकाजी को बहुत दु:ख हुआ। उनको लगा कि जब तक धार्मिक पुस्तकों के प्रकाशन के लिए अलग से प्रयास नहीं होता तब तक पुस्तकों का यही हश्र होगा। बस यहीं से 'गीताप्रेस' की नींव पड़ी।

गोयंदकाजी मुम्बई में रहते थे। बाकुंडा (प. बंगाल) में उनका कारोबार था लेकिन वह गीता प्रचार के लिए पूरे देश में घूमते रहते थे। प्रेस लगाने के लिए जगह की बात उठी तो उनके मित्र घनश्यामदास जालान ने उन्हें गोरखपुर का सुझाव दिया। यहां सुविधा यह थी कि यहां जालानजी प्रेस को कुछ समय दे सकते थे। बस, गोरखपुर में 1922 में लग गया 'गीताप्रेस'।

इसी बीच दिल्ली में आयोजित मारवाड़ी अग्रवाल महासभा के अधिवेशन में घनश्यामदास बिड़ला ने पोद्दारजी से कहा कि केवल गीता के प्रचार तक सीमित रहने से आपका उद्देश्य पूरा नहीं होगा। सद्विचारों और सनातन धर्म के प्रचार के लिए एक स्तरीय पत्रिका का प्रकाशन होना चाहिए। बस यहीं पर 'कल्याण' पत्रिका की नींव पड़ी। कल्याण नाम भी पोद्दारजी ने ही सुझाया। गोयंदकाजी ने सहमति जतायी। पर 'कल्याण' के प्रकाशन की शुरुआत मुम्बई से हुई। धार्मिक पुस्तकों के प्रकाशक खेमगन श्रीकृष्णदास के प्रेस में छपी। कल्याण का पहला अंक अगस्त, 1925 में छपा था। इस अंक में महात्मा गांधी का भी एक लेख था।

'कल्याण' 13 माह तक मुम्बई से छपी। 1926 से 'गीताप्रेस' गोरखपुर से छपने लगी। पोद्दारजी कल्याण के संपादन-प्रकाशन में जुट गये। वह देश के बड़े-बड़े धर्माचार्यों से लेख मंगवाते, सम्पादित करते। कवर पेज के लिए चित्रकारों से देवी-देवताओं के आकर्षक रंगीन चित्र बनवाते। कल्याण अत्यंत लोकप्रिय पत्रिका बन गयी। पोद्दारजी ने फिर इसके विशेषांक निकालने शुरू किये। पहला विशेषांक था 'भगवन्नामांक'। कल्याण का 'परलोक और पुनर्जन्मांक' अंक भी अत्यंत सफल रहा।

पोद्दारजी की मेहनत से 'कल्याण' एक पूजनीय वस्तु बन गयी। इसी के मार्फत 'गीताप्रेस' भी एक तीर्थ बन गया। इसीलिए यहां सिद्ध संत

उड़ियाबाबा, हरिबाबा, आनंदमयी मां, शंकराचार्य स्वामी कृष्णबोधाश्रमजी, स्वामी अखंडानंद सरस्वती, स्वामी करपात्री जी, संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, संत सीताराम दास, ओंकारनाथ महाराज जैसी हस्तियां आने लगीं। राजनीतिकों में राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, डॉ. राधाकृष्णन, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन, आरएसएस के तत्कालीन सरसंघ चालक मा.स. गोलवलकर भी गीताप्रेस पधारे।

पोद्दारजी कल्याण में प्रकाशित होने वाली सामग्री का स्वयं ही चयन करते, संपादन करते। कोई गलती न छूट जाए इसलिए प्रूफरीडिंग भी खुद करते थे। किसी भी घटना को छापने से पहले वह उसकी कई तरह से पड़ताल करते थे। वह प्रतिदिन 18-18 घंटे काम करते थे। उनकी मेहनत, लगन दूसरों के लिए प्रेरणा बनती और बाकी लोग भी समर्पित भावना से काम करते। 'कल्याण' इतनी प्रतिष्ठित पत्रिका बन गयी थी कि नामी विद्वान भी इसके संपादकीय विभाग से जुड़े। इनमें पत्रकार पं. लक्ष्मीनारायण गर्दे, पं. चिमनलाल गोस्वामी, शांतनु बिहारी द्विवेदी (भागवत मर्मज्ञ स्वामी अखंडानंद), स्वामी रामसुखदास, पं. शिवनाथ दुबे, कृष्ण चंद अग्रवाल, जानकी नाथ शर्मा, सुदर्शन सिंह 'चक्र' के नाम उल्लेखनीय हैं।

पोद्दारजी के दौर में गीताप्रेस से लगभग छह सौ पुस्तकें प्रकाशित हुईं। उन्होंने कल्याण के 46 विशेषांक निकाले। गीताप्रेस की पुस्तकें और पत्रिका 'कल्याण' विदेशों में बसे भारतीयों को भी अपने धर्म और भाषा से जोड़े रहीं।

❖❖❖

पोद्दारजी और प्रभुभक्ति

श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार बचपन से ही अत्यंत आध्यात्मिक व्यक्ति थे। युवावस्था में स्वाधीनता आंदोलन के दौरान जब उन्हें अलीपुर जेल से शिमलापाल (बाकुड़ा) नजरबंद किया गया तो उन्होंने इस एकांत का लाभ साधना करके उठाया। ब्रह्ममुहूर्त में उठकर 'हरेराम' षोड्श मंत्र का तीस माला जाप करते। संध्यावंदन के बाद श्री विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करते। 24 घंटे में 9-10 घंटे साधना में लीन रहते। उन्हें लगता जैसे भगवान विष्णु की मूर्ति उनके दिल में है। बाद में उन्हें साथ भी ऐसे लोगों का मिला जो धर्म-कर्म में लगे रहते थे। वह भजन-कीर्तन-सत्संग जैसे कार्यक्रमों में भावविभोर हो जाते, मग्न हो जाते, सुधबुध खो बैठते। 1886 में सेठ जयदयाल गोयंदका ने तीर्थराज प्रयाग में गीताज्ञान यज्ञ समारोह कराया। इसका उद्घाटन पं. मदनमोहन मालवीय ने किया था। विख्यात संगीतज्ञ पं. विष्णु दिगम्बर ने संकीर्तन किया तो पोद्दारजी ऐसे झूमे कि अन्य लोग भी मस्त होकर नृत्य करने लगे।

भगवन्नाम का आश्रय

कलियुग में भगवन्नाम ही सर्वोपरि साधन है। मेरी तो प्रथम और अंतिम एकमात्र यही अनुभूति है कि अपना कल्याण चाहने वाला व्यक्ति भगवन्नाम का आश्रय पकड़ ले। यदि और कुछ नहीं कर सकें तो शुद्ध हृदय तथा अपनी जीभ से निरंतर नाम जाप करता रहे। उसका कल्याण होने में कोई संदेह नहीं है।

—हनुमान प्रसाद पोद्दार

साथ शिलांग में रहते थे। एक दिन शाम को पांच बजे अचानक भूकंप आया। आस-पास के मकानों के साथ उनका मकान भी ध्वस्त हो गया। उनके आस-पास पत्थर ऐसे गिरे कि गुफा सी बन गयी। ऊपर एक तख्ता आ गिरा। उस पर और पत्थर। हवा जाने-आने के लिए झिरियां सी थीं। भूकंप के बाद तेज वर्षा हुई। दादी तो अपने ईष्ट हनुमानजी को मदद के लिए पुकारने लगी थीं। दादाजी अन्य लोगों के साथ मलवा हटाकर लोगों को खोजने लगे थे। छोटी बुआ के दोनों बालक मर चुके थे। बड़ी बुआ का बालक भी नहीं बचा था। दादाजी मन्नू-मन्नू कहकर पोद्दारजी को आवाज लगा रहे थे। मन्नू ने जवाब दिया तो दादाजी ने उन्हें निकाला। पोद्दारजी के इस तरह बचने को सब चमत्कार ही मान रहे थे। जैसे मन्नू की रक्षा करने के लिए ही भगवान ने एक तख्ता ऐसे रखा कि पत्थरों की मार से वह बच गये।

हादसे से बचे

यह वाकया 1919 का है। तब पोद्दारजी मुम्बई में अपने फूफाजी श्री लक्ष्मीचंद लोहिया के साथ रहते थे। फूफाजी शिवदत्तराय जी वकील के बंगले में रहते थे। यह बंगला मुम्बई से कुछ दूर बीबी एंड सीआई सांताक्रुज रेलवे स्टेशन के पास था। सांताक्रुज स्टेशन पर उतरकर उनके बंगले तक जाने के लिए ट्रेन की पटरी पार करनी पड़ती थी।

वह एक अंधेरी रात थी। प्लेटफार्म के अलावा स्टेशन पर रोशनी का भी प्रबंध नहीं था। लोकल ट्रेन से उतरकर वह बंगले की ओर चले। नादानी यह की कि इसी ट्रेन के इंजन के आगे से भागकर पटरी पार करनी चाही। पर तभी ट्रेन चल पड़ी। अचानक किसी अज्ञात व्यक्ति ने उनका हाथ पकड़ कर उन्हें जोर से खींच लिया। झटके से वह दूसरी ओर की पटरी पर जाकर धड़ाम से गिरे। धड़धड़ कर ट्रेन गुजर गयी। एक सेकेंड के अंतराल से वह बच गये थे। उनका हाथ पकड़कर किसने खींचा। वह देख नहीं पाये। कोई वहां रुका भी नहीं। यह कोई ईश्वर का दूत ही था जो उन्हें बचाने आ गया था।

घायल होने से बचे

एक वाकया 1926 का है। पोद्दारजी श्री लच्छीराम चूड़ीवाले द्वारा स्थापित गुरुकुल के कार्यक्रम में शामिल होने मुम्बई जा रहे थे। वह अहमदाबाद-दिल्ली एक्सप्रेस ट्रेन के सेकेंड क्लास में थे। वह अपनी बर्थ पर सोये हुए थे कि ब्यावर स्टेशन पर एक टीटी महोदय उनके डिब्बे में चढ़े और उनकी बर्थ पर पांवों के पास आकर बैठ गये। पोद्दारजी की आंख खुल गयी। उन्हें यह अच्छा नहीं लगा कि कोई उनके पांवों के पास बैठे। वह उठकर बैठ गये। यकायक बाहर से एक बड़ा सा पत्थर खिड़की पर आकर लगा। खिड़की का कांच टूटकर भीतर इतनी जोर से बिखरा कि सामने बर्थ पर सो रहे एक बालक के सिर में उसका एक भाग जा लगा। यह बालक गुरुकुल में दाखिले के लिए पोद्दारजी के साथ जा रहा था। पोद्दारजी यदि लेटे होते तो कांच टूटने से उनके चेहरे व सिर को बहुत नुकसान पहुंच सकता था। भला हो टीटी का जिसकी वजह से वह उठकर बैठ गये। लगता है टीटी ईश्वर के दूत के रूप में पोद्दारजी को दुर्घटना से बचाने के लिए ही अचानक डिब्बे में आ गये थे।

जब स्वयं बन गये ईश्वर के दूत

एक बार तो पोद्दारजी ही ईश्वर के दूत बन गये थे। उन्होंने अचानक ही अपने एक साथी की जान बचा ली थी।

घटना 1955 की है। तब पोद्दारजी 'कल्याण' के संपादन-प्रकाशन में लगे थे। सुदर्शन सिंह 'चक्र' उनके सहयोगी थे। वह मुक्तिनाथ दामोदर कुंड (उत्तराखंड) की यात्रा पर जाने के लिए तैयार थे। उन्होंने सामान बांध लिया था, रिक्शा आ गया था। वह विदा लेने पोद्दारजी के पास आये। हालांकि पोद्दारजी उन्हें इस यात्रा की इजाजत कई माह पहले दे चुके थे, पर इस बार वह कुछ अनमने थे। वह कहने लगे, कितना काम है करने को, आपको जाना है, जाइए। चक्रजी पोद्दारजी की मंशा समझ गये। हालांकि उन्हें थोड़ा दुख हुआ। पर उन्होंने अपने जाने का कार्यक्रम रद्द कर दिया। सामान खोल डाला और रिक्शा वापस कर दिया। उनको नहीं जाता देखकर पोद्दारजी प्रफुल्लित

हो गये। अगले दिन पता चला कि वह विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिससे चक्रजी को जाना था। सभी यात्री मर गये थे। पूर्व अनुमति पाकर भी पोद्दारजी की अप्रसन्नता ने चक्रजी की जान बचा ली थी।

भगवान राम के दर्शन

बात मुम्बई की है। पोद्दारजी को सागरमल गनेडीवाले के साथ सूरदास नाटक देखने जाना था। रास्ते में दोनों में भगवान राम को लेकर बातें होने लगीं। पोद्दारजी का कहना था कि अगर अंत समय में 'रा' और 'म' ये दो शब्द मुंह से निकल गये तो व्यक्ति सद्गति को प्राप्त होगा। सागरमल का कहना था कि आरएएम से अंग्रेजी में जो शब्द बनता है उसका अर्थ मेढ़ा होता है। अगर कोई अंग्रेज मेढ़े के भाव से आरएएम अक्षर बोले तो ...। पोद्दारजी ने कहा कि भाव कुछ भी हों राम कहा बस ...। अभी बातें चल ही रही थीं कि पोद्दारजी बाहरी जगत से जैसे कट गये। वह गुमसुम हो गये। सागरमल परेशान कि पोद्दारजी को क्या हो गया। वह कह रहे थे, ये भगवान हैं इनके चरण पकड़ लो। पर भगवान सागरमल को तो दिख नहीं रहे थे। सागरमल उन्हें घर ले आये। नल के नीचे बैठाकर सागरमल ने उन्हें खूब भिगोया। सागरमल भगवन्नाम कीर्तन करने लगे। तब जाकर पोद्दारजी धीरे-धीरे

नारायण-नारायण

महामना पंडित मदनमोहन मालवीय पोद्दारजी को बहुत स्नेह करते थे। जब गोरखपुर आते तो उनके घर ठहरते। एक बार मालवीयजी ने पोद्दार जी को 'नारायण-नारायण' मंत्र दिया। मालवीयजी की मां ने उन्हें सफलता के वरदान के रूप में यह दो शब्द बताए थे। असल में मालवीयजी ने अपनी मां से कहा था कि मुझे यह वरदान दीजिए कि मुझे हर काम में सफलता मिले। मालवीयजी सदा 'नारायण-नारायण' का जाप किया करते थे। उन्होंने यह भी कहा कि वह जब भी इसका जाप करना भूले उन्हें सफलता नहीं मिली। पोद्दारजी ने भी नारायण के जाप को अपना नियम बना लिया। सफल मालवीयजी भी अपने कामों में हुए और पोद्दारजी भी।

बाह्यजगत में लौटे। तब उन्होंने बताया कि भगवान राम, माता सीता और लक्ष्मण ने उन्हें दर्शन दिये थे। वे तीनों वन वेशधारी थे। दर्शन पाकर पोद्दारजी सुधबुध खो बैठे थे। वह उनसे बातें भी कर रहे थे। बहुत सी बातें तो पोद्दारजी को याद भी नहीं रही। हां, दो बातें याद रहीं। एक तो भगवान ने कहा, किसी प्रकार भी नाम लेने वाले की सद्गति होगी। दूसरा यह कि भगवान ने अपने भक्त गायनाचार्य विष्णु दिगम्बर का नाम लिया था। पोद्दारजी ने यह घटना विष्णु दिगम्बरजी को बतायी। वह भावविभोर होकर नतमस्तक हो गये।

❖❖❖

पोद्दारजी और उनकी रचनाएं

पोद्दारजी उच्च कोटि के भक्त-हृदय कवि थे। उनके लिखे भक्ति गीत 'पद-रत्नाकर' ग्रंथ में संकलित हैं। उन्होंने मुम्बई में निवास करते समय यह पद रचा था—

आया चरन तकि सरन तिहारी। बेगि करौ मोहि अभय बिहारी॥
जोनि अनेक फिरयो भटकान्यो। अब प्रभु पद छाड़ों न मुरारी॥
मो सम दीन न दाता तुम सम। भली मिली यह जोरि हमारी॥
मैं हौं पतित, पतितपावन तुम। पावन करु, निज विरद सभारी॥

(पद-रत्नाकर, पद सं 144)

उन्होंने यह भी अनुभव किया कि किसी का भी भरोसा नहीं किया जा सकता, केवल प्रभु का भरोसा ही सच्चा है—

अब हरि! एक भरोसो तेरो।
नहि कुछ साधन ग्यान भगति को, नहि विराग उर हेरो॥
अघ ढोवत अघात नहि कबहूं, मन विषयनको चेरो॥
इंद्रिय सकल भोगरत संतत, बस न चलत, कुछ मेरो॥
काम-क्रोध-मद-लोभ सरिस अति प्रबल रिपुनतें घेरो॥
परबस परथो, न गति निकसन की यदपि कलेस घनेरो॥
परखे सकल बंधु नहिं कोऊ विपदकालको नेरो॥
दीनदयाल दया करि राखउ, भव जल बूड़त बेरो॥

(पद-रत्नाकर, पद सं 123)

पोद्दारजी प्रभु के प्रति पूर्ण समर्पण भाव से लिखते हैं—

नाथ! तुम्हारी कितनी करुणा, कैसा अतुल्य तुम्हारा दान।

हटा असत् माया का पर्दा, दिया स्वयं ही दर्शन ज्ञान॥
नहीं रह गया अब तो कुछ भी अन्य, छोड़ कर तुमको एक।
मिथ्या जग में रमने वाले, रहे न मिथ्या बुद्धि-विवेक॥
आते लोग, सुनाते अपनी विषम समस्याओं की बात।
सुलझाने का उन्हें पूछते साधन, सविनय कर प्रणिपात॥
कहूं उन्हें, समझाऊं क्या मैं, जब न दीखता कुछ सत् सार।
सुलझाने वाले उस मनको गया सर्वथा लकवा मार॥

जब मन तनिक भी संसार की ओर जाने लगता तो वह तुरंत कह उठते—

प्रभु! मेरो मन ऐसा ह्वै जावै।
विषयनको विष सगरो उतरै, पुनि नहि कबहूं छावै।
बिनसै सकल कामना मनकी अनत न कतहूं धावै॥
निरखत निरत निरंतर माधुरी, स्याम मुरति सुख पावै।
कामी जिमि कामिनी-संग चाहै, लोभी धन मन लावै॥
तिमि अविरत निज प्रियतम की सुधि, छिन इक नहिं बिसरावै।
ममता सकल जगत की छटै, मधुर स्याम छवि भावै॥
तव आनन-सरोज रस चाखन मन मधुकर बनि जावै॥
(पद-रत्नाकर, पद सं 132)

पोद्दारजी राधा-माधव की आराधना करते-करते स्वयं राधा-माधव प्रेम में खो जाते थे। उन्होंने लिखा—

'राधा-माधव-माधव-राधा', छाये देश काल सब ओर।
नाच रही राधा मतवाली, मुरली टेर रहे मनचोर॥
देखो-सुनो, सदा सबमें, सर्वत्र भरे दोनों रसधाम।
मधुर मनोहर मूरति, मुरली-धुनि बरसाती सुधा ललाम॥
लीला लीलामय ही हैं सब, लीला लीलामय सर्वत्र।
लीला लीलामय ही रहते, करते लीला विविध विचित्र॥
नित्य मधुर दर्शन सम्भाषण, स्पर्श मधुर नित नूतन भाव।
नित नव मिलन, नित्य मिलनेच्छा, नितनवरस-आस्वादन चाव॥

कष्ट में भी भगवान की अनुभूति

सन् 1969 में पोद्दारजी के शरीर को कुछ व्याधियों ने घेर लिया। उन्होंने उस समय लिखा था— 'शरीर में भीतर कष्ट है पर अंदर ही अंदर मुझे बड़ा आनंद है। पीड़ा के रूप में मुझे भगवान के साक्षात सम्पर्क की अनुभूति हो रही है।'

8 मार्च, 1971 को गंभीर रूप से अस्वस्थ होने पर भी भाई जी का भक्त हृदय भगवान के प्रेम में व्याकुल हो उठा। लम्बी कविता के दो पद देखें—

अबकी बार व्याधि ..... पीड़ा सज प्रिय तुम आये।
बीच-बीच में स्वांग बदलते रहते तुम मन भाये॥
देख तुम्हारी इस आकृति को घरवाले थर्राये।
छोड़ शरीर तुम्हें पा नित मैं सानंद मौन समाऊं॥
..... मैं सुख-संग सिधाऊं॥
पर कैसे बच्चों, मित्रों, घरवालों को समझाऊं।
कैसे आश्वासन दूं, कैसे उन्हें रहस्य बताऊं॥
मेरी करुणा प्रार्थना सुनकर इन्हें तुम्हीं समझा दो।
.....सबको कुछ अपना मर्म जता दो॥

गोहत्या के खिलाफ

गोहत्या होगी नहीं, जब तक पूरी बंद।
तब तक होगा देश में, कहीं न सुख स्वच्छन्द॥
असुर भाव नित बढ़ेगा, होगा नहीं विकास।
होता ही नित रहेगा, दुखद घोर विनाश॥
सबको प्रभु सद्‌बुद्धि दें, हरें मोह अज्ञान।
एक स्वर में सभी लें, गोवध बन्दी मान॥
करे घोषणा शुचि सुखद, सत्वर यह सरकार।
पाप मिटे फैले सुयश, हो ध्वनि जय-जयकार॥

❖❖❖

पोद्दारजी का साहित्य

निबंध संग्रह

- श्री राधामाधव चिन्तन
- भगवच्चर्चा भाग-2 (नैवेद्य)
- भगवच्चर्चा भाग-4
- मानव जीवन का लक्ष्य
- सुखी बनने के उपाय
- समाज किस ओर जा रहा है।
- भगवच्चर्चा भाग-1 (तुलसीदल)
- भगवच्चर्चा भाग-3
- भगवच्चर्चा भाग-5
- अमृत-कण
- भवरोग की रामबाण दवा
- पूर्ण समर्पण (भगवच्चर्चा भाग-6)

पत्र संग्रह

- लोक-परलोक का सुधार भाग-1
- लोक-परलोक का सुधार भाग-2
- लोक-परलोक का सुधार भाग-3
- लोक-परलोक का सुधार भाग-4
- लोक-परलोक का सुधार भाग-5
- व्यवहार और परमार्थ
- सुख शांति का मार्ग
- शांति की सरिता
- सुखी बनो

उद्‌बोधक साहित्य

- कल्याण कुंज भाग-1
- कल्याण कुंज भाग-2
- कल्याण कुंज भाग-3
- मानव कल्याण के साधन
- दिव्य सुख की सरिता
- सफलता के शिखर की सीढ़ियां
- परमार्थ की मंदाकिनी

स्त्रियोपयोगी साहित्य

- नारी शिक्षाा
- स्त्री धर्म प्रश्नोत्तरी

पद्यात्मक रचनाएं

- पद-रत्नाकर
- ब्रज-रस-माधुरी
- हरिप्रेरित हृदय की वाणी
- मधुर
- शिव चालीसा
- पत्र-पुष्प (भाग-5)
- ब्रज-रस की लहरें
- प्रार्थना पीयूष
- श्री राधा-माधव-रस-सुधा

टीका साहित्य

- प्रेम दर्शन (नारद भक्ति सूत्रों की व्याख्या)
- श्री रामचरितमानस (टीका सहित)
- दोहावली (टीका सहित)
- विनय-पत्रिका (टीका सहित)
- रास पञ्चाध्यायी (टीका सहित)

सम्पादित पुस्तकें

- भक्त नारी
- भक्त सप्तरत्न
- यूरोप की भक्त स्त्रियां
- सत्यप्रेमी हरिश्चन्द्र
- महात्मा विदुर
- भक्त सौरभ
- भक्त सुमन
- भक्त महिलारत्न
- भक्त दिवाकर
- ईश्वर की सत्ता और महत्ता
- भक्त चन्द्रिका
- भक्त कुसुम
- भक्तराज हनुमान
- प्रेमी भक्त उद्धव
- भक्तराज ध्रुव
- भक्त सरोज
- ढाई हजार अनमोल बोल (संत वाणी)
- भक्त सुधाकर
- भक्त रत्नाकर
- आरती संग्रह

अन्य पुस्तकें

- ब्रह्मचर्य
- साधन-पथ
- भक्त बालक
- भक्त पंचरत्न
- समाज सुधार
- मानव धर्म
- आनंद की लहरें
- आदर्श भक्त

- प्रेमी भक्त
- दिव्य संदेश
- मारवाड़ी धार्मिक गीत
- प्राचीन भक्त
- सत्संग के बिखरे मोती
- हिन्दू संस्कृति का स्वरूप
- दैनिक कल्याण-सूत्र
- दाम्पत्य जीवन का आदर्श
- परमार्थ की पगडंडियां
- कल्याणकारी आचरण
- पद
- गीता में विश्वरूप दर्शन
- श्रीकृष्ण महिमा का स्मरण
- दीन-दुखियों के प्रति कर्त्तव्य
- सिनेमा मनोरंजन या विनाश का साधन
- बलपूर्वक देवमंदिर प्रवेश और भक्ति
- मनको वश में करने के कुछ उपाय
- श्रीराधा-माधव का मधुर रूप-गुण-तत्व
- श्री राधा नाम और राधा उपासना सनातन है
- पूर्ण परात्पर भगवान श्रीकृष्ण का आविर्भाव
- श्री राधा-जन्माष्टमी व्रत महोत्सव की प्राचीनता-महिमा और पूजा विधि
- गोपी प्रेम
- उपनिषदों के चौदह रत्न
- वर्तमान शिक्षा
- हिन्दू क्या करें?
- प्रार्थना
- विवाह में दहेज
- जीवन में उतारने की सोलह बातें
- सत्संग वाटिका के बिखरे सुमन
- आरती माला
- मेरी स्थिति का स्पष्टीकरण
- रासलीला-रहस्य
- रस और भाव

❖❖❖

अमृत वचन

(पोद्दार जी के विचार)

ईश्वर का स्वरूप

आज तक ईश्वर के संबंध में जितना वर्णन हुआ है, वह सब मिलकर भी ईश्वर यथार्थ स्वरूप का निर्देश नहीं कर सकता, क्योंकि ईश्वर मनुष्य की बुद्धि के परे हैं, वह परम वस्तु मनुष्य की बुद्धि में नहीं समा सकती। बुद्धि प्रकृति का कार्य होने से जड़ और परिछिन्न है, वह उस अनन्त, सर्वव्यापी, सर्वाधार, सर्वान्तर्यामी, नित्य ज्ञानानन्दघन चेतन का आकलन किस प्रकार कर सकती है। जो वस्तु ज्ञान का विषय होती है, वह सीमित, प्रमेय और धर्मी वस्तु ही होती है। जो सीमित है, जिसका परिमाण हो सकता है, वह वस्तु ईश्वर नहीं हो सकती। बुद्धि या ज्ञान जिस पदार्थ का निरूपण करता है, उस पदार्थ का कोई एक निश्चित रूप ज्ञान में रहता है, ऐसा ज्ञेय पदार्थ सबका प्रकाशक सबकी आधार ज्योति नहीं हो सकता। जिसका प्रकाश बुद्धि करती है, वह बुद्धि से प्रकाश देने वाला कैसे हो सकता है? परमात्मा-ईश्वर ज्ञेय नहीं है, प्रमेय नहीं है, प्रकाश नहीं है, वह तो स्वयं ज्ञाता, प्रमाता, चेतनज्योतिरूप, सबका प्रकाशक, स्वयंप्रकाश है। वह किसी भी बुद्धि का चिन्त्य विषय नहीं है, सारी बुद्धियों में चिन्ताप्रवणता उसी से आती है। वह स्वयं प्रमाणरूप और ज्ञानरूप है। वस्तुतः ऐसा कहना भी उसको सीमाबद्ध करना है-उसका माप करना है। उसे कालातीत-गुणातीत कहना भी उसका परिमाण बांधना है। वस्तुतः ईश्वर तत्व ईश्वर ही जानता है, वह स्वानुभवरूप है, दूसरा कोई उसे जान ही नहीं सकता, तब वर्णन कैसे कर सकता है। जब तक दूसरा रहता है, तब तक जानता नहीं और दूसरा न रहने पर वर्णन का प्रसंग ही असम्भव है।

सत्य तत्व ही परमात्मा है

सत्य-तत्व या परमात्मा एक है। वे निर्गुण होते हुए ही सगुण, निराकार होते हुए ही साकार, सगुण होते हुए ही निर्गुण तथा साकार होते हुए ही निराकार हैं। उनके संबंध में कुछ भी कहना नहीं बनता और जो कुछ कहा जाता है, उन्हीं के संबंध में कहा जाता है। अवश्य ही जो कुछ कहा जाता है, वह अपूर्ण ही होता है। पूर्ण का वर्णन किसी भी तरह हो नहीं सकता। परंतु परमात्मा किसी भी हालत में अपूर्ण नहीं है, उनका आंशिक वर्णन भी पूर्ण का ही वर्णन होता है, क्योंकि उनका अंश भी पूर्ण ही है। इन्हीं परमात्मा को ऋषियों ने, संतों ने, भक्तों ने नाना भावों से पूजा है और परमात्मा ने उन सभी की विभिन्न भावों से की हुई पूजा को स्वीकार किया।

वे परात्पर सच्चिदानंदघन एक परमेश्वर ही परम तत्व हैं। वे गुणातीत हैं परंतु गुणमय हैं, विश्वातीत हैं, परंतु विश्वमय हैं। सबमें वे व्याप्त हैं और जिनमें वे व्याप्त हैं, वे सभी पदार्थ-समस्त चराचर भूत उन्हीं में स्थित हैं। वे ही परात्पर प्रभु विज्ञानानन्दघन ब्रह्मा, महादेव, महाविष्णु, महाशक्ति, अनन्तानन्दमय साकेताधिपति श्रीराम और सौंदर्य सुधासागर गोलोकाधीश्वर श्रीकृष्ण हैं। ये सभी विभिन्न हैं। ये सभी विभिन्न स्वरूप सत्य और नित्य हैं। परंतु अनेक दिखते हुए भी वस्तुतः ये सदा-सर्वदा एक ही।

एक मात्र लक्ष्य-भगवत्प्रेम

भगवत्प्रेम पथिकों का एकमात्र लक्ष्य होता है—भगवत्प्रेम। वे भगवत्प्रेम को छोड़कर मोक्ष भी नहीं चाहते-यदि प्रेम बाधा आती दीखे तो भगवान साक्षात मिलन की भी अवहेलना कर देते हैं यद्यपि उनका हृदय मिलन के लिए आतुर रहता है। जगत का कोई भी पार्थिव पदार्थ, कोई भी विचार, कोई भी मनुष्य, कोई भी स्थिति, कोई भी संबंध, कोई भी अनुभव उनके मार्ग में बाधक नहीं हो सकता। वे सबका आनायास-बिना ही किसी संकोच, कठिनता, कष्ट और प्रयास के त्याग कर सकते हैं। संसार के किसी भी पदार्थ में उनका आकर्षण नहीं रहता। कोई भी स्थिति उनकी चित्तभूमि पर आकर

नहीं टिक सकती, उनको अपनी ओर नहीं खींच सकती। शरीर का मोह मिट जाता है। उनका सारा अनुराग, सारा ममत्व, सारी आसक्ति, सारी अनुभूति, सारी विचारधारा, सारी क्रियाएं एक ही केन्द्र में आकर मिल जाती हैं— वैसे ही जैसे विभिन्न पथों में आनेवाली नदियां एक ही समुद्र में आकर मिलती हैं। वह केन्द्र होता है, केवल भगवत्प्रेम।

मानव जीवन का असली लक्ष्य

मनुष्य जीवन का एकमात्र उद्देश्य है— भगवत्प्राप्ति अथवा भगवत्प्रेम की प्राप्ति। इस उद्देश्य को निरंतर सामने रखकर ही हमारे सारे कार्य, सारे व्यवहार, सारे विचार, सारे संकल्प-विकल्प और मन बुद्धि तथा शरीर की सारी चेष्टाएं होनी चाहिए। सबकी अबाध गति निरंतर श्रीभगवान की ओर हो। यही साधन है। भगवान साध्य हैं और यह जीवन उनका साधन है। इसी में जीवन की सार्थकता है। अतएव बुद्धि, मन, प्राण और इंद्रियां-सबको सर्वभाव से श्रीभगवान की ओर अनन्य गति से लगा देना चाहिए। हम कुछ भी काम करें, कुछ भी विचार करें, 'भगवान ही हमारे जीवन के एकमात्र लक्ष्य हैं'—यह स्मृति सदा जाग्रत रहनी चाहिए।

जब तक तुम जगत् के पदार्थों को अपना मानते रहोगे, उनमें ममत्व रखोगे, तब तक कभी निश्चित नहीं हो सकोगे। ये नाशवान, क्षणभंगुर परिवर्तनशील पदार्थ कभी तुम्हें निश्चित नहीं होने देंगे। इन पर से ममत्व और आसक्ति को हटा लो, ये जिनकी चीजें हैं, उन्हें सौंप दो। बस, जहां तुमने इनको भगवान के समर्पण किया कि वहीं निश्चित हो गये। फिर न नाश का भय है, न अभाव की चिंता है और न कामना की जलन है।

पूजा का सबसे अच्छा पुष्प-श्रद्धा

भगवान की पूजा के लिए सबसे अच्छे पुष्प हैं-श्रद्धा, भक्ति, प्रेम, दया, मैत्री, सरलता, साधुता, समता, सत्य, क्षमा आदि दैवी गुण। स्वच्छ और पवित्र मन-मंदिर में मनमोहन की स्थापना करके इन पुष्पों से उनकी पूजा करो।

जो इन पुष्पों को फेंक देता है और केवल बाहरी फूलों से भगवान् को पूजना चाहता है, उसके हृदय में भगवान आते ही नहीं, फिर वह पूजा किसकी करेगा?

एक क्षण भी बेकार न करो

मनुष्य के जीवन के एक क्षण का भी पता नहीं है, न जाने किस पल में प्रलय हो जाये, कब मृत्यु आ जाये। इसलिए 'अमुक स्थिति हो जाने पर भगवान का भजन करूंगा' ऐसी धारणा छोड़ देनी चाहिए और अभी जो जिस अवस्था में है, उसे उसी अवस्था में भगवान की कृपा का आश्रय करके साधना आरम्भ कर देनी चाहिए। आधे क्षण का भी विलम्ब नहीं करना चाहिए।

पलक मारते-मारते मृत्यु के ग्रास बन जाओगे, फिर कब करोगे? यह मत समझो कि 'अभी छोटी उम्र है—खेलने-खाने और विषय भोगने का समय है, बड़े-बूढ़े होने पर भजन करेंगे।' कौन कह सकता है कि तुम बड़े-बूढ़े होने से पहले ही नहीं मर जाओगे? मौत की नंगी तलवार तो सदा ही सिरपर झूल रही है। जरा सा भी समय भगवान के भजन के बिना नहीं बिताना चाहिए। जो समय भगवद्भजन में जाता है, वही सार्थक है, शेष सब व्यर्थ है, समय का मूल्य समझकर एक-एक सांस को खूब सावधानी के साथ कंजूस के परिमित पैसों की भांति केवल भगवच्चिन्तन में ही लगाना उचित है। भजनहीन काल ही वास्तव में हमारे लिए भयंकर काल है। वही सबसे बड़ी विपत्ति है।

पाप पुण्य की परिभाषा

पाप और पुण्य की सीधी-सी परिभाषा यह है कि जिस भावना या क्रिया से अपना तथा दूसरों का अहित होता हो, वह 'पाप' है और जिस भावना या क्रिया से अपना तथा दूसरों का हित होता हो, वह 'पुण्य' है। जिससे दूसरों का हित नहीं होता, उससे अपना हित नहीं होता, उससे अपना हित कदापि नहीं होगा और जिससे दूसरों का हित होता है, उससे अपना कभी अहित नहीं

होगा—यह सिद्धांत निश्चित रूप से मान लेना चाहिए। हमारा वास्तविक हित दूसरों के हित में ही समाया है। जो मनुष्य ऐसा मानते हैं कि हम दूसरों का अहित करके या दूसरों के हित की उपेक्षा करके अपना हित करते हैं या कर लेंगे, वे वस्तुतः बड़े मूर्ख हैं। वे अपना हित कभी कर ही नहीं पाते। यह मान्यता ही भ्रम है कि दूसरों के हित की उपेक्षा या उनका अहित करने से हमारा हित हो जाएगा। यथार्थ में वे मनुष्य बड़े ही अभागे हैं, जो दूसरों के अहित में अपना हित और दूसरों के दुःख में अपना सुख समझते हैं। ऐसे मनुष्य ही 'असुर-मानव' हैं, जिनका जीवन दूसरों की बुराई में ही लगा रहता है। वे दूसरों की बुराई करके अपनी ही बुराई करते हैं।

असली उन्नति किसे कहते हैं ?

उन्नति तथा उत्थान का वास्तविक अर्थ है—चरित्र का उत्थान, मानस उच्चता और तदनुरूप व्यवहार-बर्ताव में विशुद्धि। यही वास्तविक जीवन-संस्कार या संस्कृति है। हमारे अंदर के दुर्विचारों, दुर्गुणों तथा दोषों का नाश होकर अंतर के भावों का सात्विक सुधार हो जाए, वासना, कामना आदि विशुद्ध हो जाएं, उनमें से भोगासक्ति, हिंसा, असत्य, उच्छृंखलता आदि दोष निकल जाए, जीवन विशुद्ध, संयमपूर्ण तथा पर-सुख हित स्वरूप बन जाए और विचारों के अनुसार ही आचार भी सत्य, शिव सुंदर हो जाए तभी उसकी संस्कृति का उदय समझना चाहिए। आज तो हमारी सारी संस्कृति समाज के हिताहित की दृष्टि से शून्य-केवल कला-प्रदर्शक संगीत, वाद्य, अभिनय तथा नृत्य और उसके सहयोगी सहभोज पान में ही सीमित हो गयी है। इसी संस्कृति का प्रदर्शन करने के लिए हमारे नृत्य, वाद्य-संगीत-कुशल कलाकारों की 'सांस्कृतिक पार्टियां' विदेशों में भी संस्कृति प्रदर्शन के लिए जाया करती हैं। समाज में गीत-वाद्य, नाट्य-नृत्य का भी महत्वपूर्ण स्थान है। ये बड़ी मनोहर और उपयोगी कलाएं हैं। पर हैं तभी, जब इनके साथ संस्कृति का निवास स्थान पवित्र-संस्कृत अन्तःकरण हो। केवल 'कला' तो 'काल' बन जाती है।

तुम्हारे मस्तक पर रख देगी, तुम सहज ही कृतार्थ हो जाओगे।

याद रखो, विश्व के रूप में साक्षात भगवान ही प्रकट हो रहे हैं। जीव के रूप में शिव ही विविध लीला कर रहे हैं। इसलिए तुम किसी से घृणा न करो, किसी का कभी अनादर न करो, किसी का अहित मत चाहो। निश्चय समझो-यदि तुमने स्वार्थवश किसी जीव का अहित किया, किसी के हृदय में चोट पहुंचायी तो वह चोट तुम्हारे भगवान के ही हृदय में लगेगी। तुम चाहे जितनी देर अलग बैठकर भगवान को मनाते रहो, जब तक सर्वभूतों में स्थित भगवान पर तुम स्वार्थवश चोट करते रहोगे, तब तक भगवान तुम्हारी पूजा कभी स्वीकार नहीं कर सकते।

पाप को छोटा समझकर कभी उससे बेखबर न रहो। याद रखो, आग की जरा-सी चिनगारी बड़े भारी शहर को जला देती है, एक छोटा-सा बीज बड़े भारी जंगल का निर्माण कर सकता है। यह मत समझो कि काम-क्रोध-लोभ का क्षणिक आवेश हमारा क्या बिगाड़ सकेगा, इनको समूल नष्ट करने का सतत प्रयत्न करते रहो। जिसका मन वश में है, वही यथार्थ में स्वाधीन है। देह का बंधन-बंधन नहीं है, असली बंधन है-मन का बंधन। एक आदमी देह से स्वतंत्र है, परंतु यदि वह मन के अधीन है तो उसे सर्वथा पराधीन ही समझना चाहिए। मन पर विजय प्राप्त करने वाला ही यथार्थ विजयी है। अतएव मन को वश में करो।

मन को वश में करना जरूरी

मन को वश में करने के लिए यदि तुम्हें विधि या नियमों के बंधन में रहना पड़े तो अपना सौभाग्य समझो, यह बंधन ही तुम्हें मन की गुलामी से मुक्त करेगा। उच्छृंखलता बंधन की गांठों को और भी कस देती है, अतएव नियमों की शृंखला में बंधे रहने में ही मंगल समझो।

जहां तक बने, विषयों का संग्रह न करो, विषयों का चिन्तन न करो, विषयी पुरुषों का संग न करो, विषयासक्ति बढ़ाने वाले दृश्य न देखो, बात न सुनो और इस तरह के ग्रंथ न पढ़ो, जिसके कारण मन का, धन का, रूप का पतन होता हो।

विषय भोग में मानव जीवन की सार्थकता नहीं है

याद रखो–मानव जीवन की सफलता भगवत्प्राप्ति में है, विषय भोगों की प्राप्ति में नहीं। जो मनुष्य जीवन के असली लक्ष्य भगवान को भूलकर विषय भोगों की प्राप्ति और उनके भोग में ही रचा-पचा रहता है, वह अपने दुर्लभ अमूल्य जीवन को केवल व्यर्थ ही नहीं खो रहा है, वरन् अमृत देकर बदले में भयानक विष ले रहा है।

याद रखो–बहुत जन्मों के बाद बड़े पुण्यबल तथा भगवत्कृपा से जीव को मानव-शरीर प्राप्त होता है। इंद्रियों के भोग तो अन्यान्य योनियों में भी मिलते हैं, पर भगवत्प्राप्ति का साधन तो केवल इसी शरीर में है, इसको पाकर भी जो मनुष्य विषय-भोगों में ही फंसा रहता है, वह तो पशु से भी अधिक मूढ़ है।

याद रखो–यदि तुमने इस जीवन में भगवान को नहीं प्राप्त किया, कम से कम भगवत्प्राप्ति के पथ पर नहीं आ पाये तो तुम्हें पीछे इतना पछताना पड़ेगा कि जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। अतः हाथ में आये हुए इस महान सुअवसर के एक-एक क्षण को बड़ी ही सावधानी के साथ जीवन के असली लक्ष्य भगवत्प्राप्ति के साधन में ही लगाना चाहिए।

मनुष्य पाप स्वयं करता है

भगवान किसी पापी या अन्यायी का हाथ नहीं रोकते। यह उन्हीं का बनाया हुआ नियम है कि मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र है। जैसे गवर्नमेंट जब किसी को बंदूक का लाइसेंस देती है, तब उसे बंदूक रखने या चलाने की कानूनी बातें समझाकर स्वतन्त्र कर देती है। फिर वह अपनी इच्छानुसार उस शस्त्र का उपयोग करता है। वह चाहे तो कानून का पालन करते हुए उसका उपयोग कर सकता है अथवा चाहे तो कानून तोड़ कर भी उपयोग कर सकता है। जिस समय कानून के विरुद्ध वह उस शस्त्र को चलाता है, उस समय भी वह उसका हाथ पकड़ने नहीं आती, फिर भी उसके कानून भंग करने का दण्ड उसे यथासमय अवश्य देती है तथा शस्त्र भी जब्त कर लेती है। इसी प्रकार भगवान जब जीव को मानव शरीर रूपी शस्त्र देकर संसार में

भेजते हैं, तब शास्त्र रूपी कानून साथ रख देते हैं और कहते हैं—'शास्त्र के अनुसार चलने से तुम्हें लाभ होगा, पुरस्कार प्राप्त होगा।' जो शास्त्र के विरुद्ध चलता है, उसका वे हाथ नहीं पकड़ते, केवल उसके अन्याय को स्मरण रखते हैं और उसका यथोचित दण्ड समय पर उसे देते हैं।

मानव कर्म में स्वतंत्र, किन्तु फल भोग में परतंत्र है

भगवान ने प्रत्येक मनुष्य को कर्म करने में स्वतंत्रत बना रखा है। अतएव उसके कार्य की जिम्मेदारी उसी पर है। वह कर्म करने में स्वतंत्र, किन्तु फलभोग में परतंत्र है। मनुष्य के अंत:करण में दो प्रधान शत्रु हैं—काम और क्रोध। ये ही सारे अनर्थों की जड़ हैं। इन्हीं की प्रेरणा से मनुष्य पाप कर्म में प्रवृत्त होता है। ये दोनों शत्रु अपने मन में रहते हैं और हम ही इनको प्रोत्साहन देते हैं। अत: इनके द्वारा होने वाले कर्म भी हमारे ही किये हुए समझे जाते हैं। अतएव कोई भी मनुष्य जो राग-द्वेष या कामना के वशीभूत होकर कर्म में प्रवृत्त होता है, अपने किये हुए कर्मों के उत्तरदायित्व से मुक्त नहीं हो सकता। उसे उनका फल अवश्य भोगना ही पड़ेगा।

पग-पग पर सावधान रहो

असावधानी विनाश को बहुत शीघ्र बुला लाती है। सचेत रहो, सावधान रहो, जीवन-महल के किसी भी दरवाजे से काम-क्रोध रूपी किसी भी चोर को अंदर न घुसने दो और सावधानी के साथ, जो पहले घुसे बैठे हों, उन्हें दृढ़ता और शूरता के साथ निकालने की प्राणपण से चेष्ठा करते रहो। सावधानी ही साधना है।

जीवन के एक-एक क्षण को मूल्यवान समझो और बड़ी सावधानी के साथ प्रत्येक क्षण, भगवच्चिन्तन या आत्मचिन्तन करते हुए लोकहित के कार्य में बिताओ। तुम्हारा कोई क्षण ऐसा नहीं जाना चाहिए, जिसमें किसी का तुम्हारे द्वारा अहित हो जाए। अहित वाणी और शरीर से ही होता है, यह बात नहीं है। यदि तुम्हारे मन में बुरा विचार आ गया तो मान लो, तुम अपना और दूसरों का अहित करने वाले हो गये। बुरा विचार कभी मन में न आने दो और

पूर्व संस्कारवश आ जाए तो उसको तुरंत निकाल बाहर कर दो। बुरे विचार को आश्रय कभी मत दो, उसकी ओर से लापरवाह न रहो।

मन को मौन करो। मुंह से न बोलने का नाम ही मौन नहीं है। मौन कहते हैं—चित्त के मौन हो जाने को। चित्त जगत का मनन ही न करे, जगत का कोई मित्र चित्तपटल पर रहे ही नहीं, बस, एकमात्र परमात्मा में ही चित्त रम जाए, वह उसी में प्रविष्ट हो जाए।

निर्मल सुख

याद रखो जो पुरुष त्याग से प्राप्त होने वाले निर्मल सुख का अनुभव करता है, वह भोगों की ओर कभी आंख उठाकर देखता ही नहीं। हां, भोगों के प्रचुर प्रलोभन भांति-भांति से सज धजकर उसके सामने स्वयमेव आते हैं उसे अपनी ओर खींचने के लिए, परंतु वह उन्हें उसी प्रकार ठुकरा देता है जैसे बहुमूल्य रत्नों को पा जाने वाला मनुष्य रंग-बिरंगे कांच-पत्थरों को ठुकरा देता है।

सच्चा सुखी सदाचारी ही है

सच्चे सुखी वही हैं—जो सद्गुणी और सदाचारी हैं, जिन्होंने काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर आदि शत्रुओं को जीत लिया है। ऐसे पुरुष सदा ही सुख, शांति में निवास करते हुए अंत में अमरत्व और परम शांति को प्राप्त होते हैं।

पाप की कमाई नाश कर देती है

आज संसार में सब-कुछ रुपये से है, रुपये का ही मान-सम्मान है, नहीं तो कोई पूछता भी नहीं। बात ठीक है, परंतु यह तो संसारी विषयी पुरुषों की समझ है और उनकी यह समझ ठीक भी है। परमार्थमार्गियों की समझ तो इससे बिल्कुल उल्टी होनी चाहिए। विषयी मनुष्य धन, मान, इज्जत चाहते हैं। मुमुक्षु इससे विपरीत चाहते हैं और मुक्ति के लिए दोनों में समता होती है। हम लोगों को मुमुक्षु की भांति धन-मान के नाश होने में परमात्मा की कृपा

का अनुभव करना चाहिए।

अर्थ की लोलुपता से या अधिक आवश्यकता की कल्पना से तुम दूसरों का स्वत्व छीनकर, पराया हक मारकर, गरीबों तथा असमर्थों को सताकर अर्थोपार्जन या अर्थ-संग्रह करते हो तो तुम महापाप करते हो। ऐसा अर्थ सर्वथा अनर्थरूप है, वह यहां भी तुम्हें जलाता रहेगा, चाहे कुछ दिन अभिमान के मद में इसका अनुभव न कर सको और परलोक में तो तुम्हें इसका बड़ा ही भीषण परिणाम भोगना पड़ेगा। अतएव अर्थ के लोभ में न पड़कर प्राप्त अर्थ का सदुपयोग करो। अप्राप्त की अन्यायपूर्वक प्राप्ति के साधन से सदा दूर रहो।

भगवान परम दयालु हैं

विश्वास करो-भगवान परम दयालु हैं। तुम चाहे कितने ही पतित, कितने ही पातकी और कितने ही घृणित क्यों न हो, भगवान तुमसे घृणा नहीं कर सकते। इस बात का निश्चय करो और कातर स्वर से उन्हें पुकारो। वे उसी क्षण तुम्हारी सारी विपत्ति हर लेंगे।

अहंकार पथभ्रष्ट करता है

ससांर की किसी वस्तु को पाकर अहंकार न करो, सभी विषयों में एक से एक बढ़कर पड़े हैं। अपने को छोटा मानकर नम्रता और विनय के साथ सबसे सम्मान युक्त व्यवहार करो। तभी सच्ची राह मिलेगी। जो अहंकार में अंधे हो रहे हैं, वे तो पथभ्रष्ट हैं।

भगवान की कृपा

याद रखो, भगवान ने तुम पर कृपा करके संसार-सागर से तरने और भगवान का प्रेम प्राप्त करने के सारे साधन सुलभ कर दिये हैं। इन साधनों को पाकर भी यदि तुम असावधान रहोगे और इनसे लाभ नहीं उठाओगे तो तुम्हारे समान मूर्ख और कौन होगा?

श्री भगवान मंगलमय, आनंदमय, ऐश्वर्यमय, ज्ञानमय, दयामय, प्रेममय,

सौंदर्यमय, माधुर्यमय और सामर्थ्यमय हैं। वे प्रत्येक प्राणी के स्वाभाविक ही सुहृद हैं। उनसे मांगना हो तो यही मांगना चाहिए कि हे भगवान! तुम जो ठीक समझो, मेरे लिये वही विधान करो।

पर-सुख को निज सुख मानो

जब तक मानव परसुख को निज सुख नहीं मानेगा, जब तक निज सुख का त्यागी और पर-सुख का विधायक नहीं बनेगा, तब तक सच्चे अर्थ में विश्व प्रेम का उदय कभी नहीं होगा।

किसी से कुछ न मांगो

किसी से कुछ भी न मांगोगे, लोग तुम्हें देने के लिए तुम्हारे पीछे-पीछे फिरेंगे। मान न चाहोगे, मान मिलेगा। स्वर्ग न चाहोगे, स्वर्ग के दूत तुम्हारे लिए विमान लेकर आएंगे। इतने पर भी तुम इन्हें स्वीकार न करोगे तो भगवान तुम्हें अपने हृदय से लगा लेंगे।

चतुराई चतुर्भुज से दूर करती है

अहंकारवश मनुष्य सफलता में अपने को कर्त्ता मान कर यश लूटना चाहता है और भगवान की मर्जी कहकर विफलता का दोष भगवान पर मढ़ना चाहता है। भगवान दोनों ही समय हंसते हैं।

सच्चे संत का दर्शन

याद रखो—जिसको अपने जीवन में एक बार भी सच्चे संत के दर्शन का, उससे उपदेश प्राप्त करने का, उसके कर स्पर्श का और उसकी चरणधूलि सिर चढ़ाने का सौभाग्य प्राप्त हो गया, वह परम आनंद और परम शांति का सहज ही अधिकारी हो गया।

भगवान हृदय में निवास करते हैं

याद रखो—भगवान तो सभी के हृदय में हैं, परंतु तुम्हें इस बात पर

विश्वास नहीं, इसी से नित्य निवास करने वाले भगवान भी वहां प्रकट नहीं हो पाते। भजन के द्वारा विश्वास प्राप्त करो और फिर विश्वास की आंखों से देखो, भगवान तुम्हारे अंदर प्रकट हो जायेंगे।

विश्वास करो—तुम्हारे अंदर भगवान विराजमान हैं, तुम्हारे अंदर उनकी शक्ति छिपी हुई है। तुम चाहो तो अपने अंदर उनका अनुभव कर सकते हो, उन्हें देख सकते हो और उनकी अचिन्त्य शक्ति से शक्तिमान बन सकते हो।

❖❖❖

दुखद क्षण

पेट में भयानक पीड़ा होने के बाद पोद्दारजी के जीवन में वह दुखद क्षण भी आया जब देश इस महान विभूति से वंचित हो गया। 22 मार्च 1971 (चैत 10 विक्रमी संवत, 2027) को उनका देहावसान हो गया।

1992 में पोद्दारजी की जन्म शताब्दी राष्ट्रीय स्तर पर मनायी गयी। 23 सितम्बर, 1992 को पोद्दारजी की स्मृति में डाकटिकट जारी किया गया। इस अवसर पर अटल बिहारी वाजपेयी जैसे राजनीतिक नेता, सेठ जयदयाल डालमिया जैसे उद्यमियों के अलावा विश्व हिन्दु परिषद नेता विष्णु हरि डालमिया और अशोक सिंघल आदि भी मौजूद थे।

उनके ब्रह्मलीन होने पर आरएसएस के तत्कालीन सरसंघ चालक गुरुजी मा.स. गोलबलकर ने कहा था—लोगों के मन में धर्म भावना जगाने के लिए, प्रभु के प्रति विश्वास को सुदृढ़ करने के लिए, विभिन्न सदाचार के प्रति निष्ठावान बनाने के लिए पोद्दारजी द्वारा किया गया कार्य अपने ढंग का अनूठा था जो चिरस्मणीय रहेगा। पोद्दारजी जैसी विभूति पर समस्त अग्रवाल समाज ही नहीं पूरे देश को सदैव गर्व रहेगा।

❖❖❖

ISBN : 978-81-929878-7-3

श्री अग्रसेन फाउंडेशन
83, मॉडल बस्ती, करोल बाग, नई दिल्ली-110005
दूरभाष : 011-23633333, 23510630
E-mail : agroha@gmail.com
Website : www.allagrawal.org